पवन कुमार

जल समाचार

जल संरक्षण को जन भागीदारी जरूरी

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान रूड़की में विश्व जल दिवस के मौके पर 22 मार्च 2019 को वर्ष 2030 तक सभी के लिए जल ''कोई भी न रहे वंचित'' विषय पर ब्रेन स्टॉर्मिंग सत्र का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन संस्थान में चलाए जा रहे स्वच्छता पखवाड़े के तहत किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में वॉटर कॉन्फ्लिक्ट्स एंड गवर्नेंस, सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च नई दिल्ली के अनुसंधान अध्यक्ष डॉ. श्रीनिवास चोक्काकुला उपस्थित रहे। इस मौके पर डॉ. चोक्काकुला ने इंटरस्टेट रीवर वाटर गवर्नेंस-कॉन्फ्लिक्ट टु कॉपरेशन पाथवेज विषय में बताया। जबकि हिमालयन एन्वायर्नमैंटल स्टडीज एंड कंजर्वेशन ऑर्गेनाइजेशन, देहरादून के अध्यक्ष डॉ. अनिल प्रकाश जोशी ने जल, जल के उपयोग और जल संरक्षण के विभिन्न पहलुओं में जन भागीदारी के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। संस्थान के निदेशक डॉ. शरद कुमार जैन ने विश्व जल दिवस के महत्व और जल संरक्षण एवं संचयन में आम नागरिकों की भूमिका पर प्रकाश डाला। जबकि वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. मनमोहन कुमार गोयल ने संस्थान की ओर से जल एवं जलविज्ञान के क्षेत्र में किए जा रहे विभिन्न कार्यों की प्रस्तुतिकरण के माध्यम से जानकारी दी। इस मौके पर स्वच्छ भारत मिशन के नोडल अधिकारी डॉ. एलएन ठकुराल, आईआईटी रूड़की के डॉ. एसके मिश्रा एवं डॉ. मनोज जैन के अलावा डॉ. अजय सिंह, इंजीनियर अजय शर्मा, एसी पाण्डेय, पीके मल्ल, डॉ. भीष्म कुमार, डॉ. जयवीर त्यागी, डॉ. एके लोहनी, डॉ. मनोहर अरोड़ा, डॉ. गोपाल कृष्ण, फुरकान उल्लाह, पीके उनियाल, किरण आहुजा आदि उपस्थित रहे।

शिक्षकों और बच्चों ने ली शपथ

स्वच्छता पखवाड़े के तहत राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान ने स्कूल के बच्चों को जागरूक किया। शिक्षकों एवं बच्चों को स्वच्छता की शपथ दिलाई गई। साथ ही स्कूल प्रांगण में पौधे रोपित किए गए।

विश्व जल दिवस-2019 के अवसर पर नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत करते स्कूली छात्र - छात्राएं।

संस्थान की ओर से सेंट जोसफ जूनियर हाईस्कूल में स्वच्छता एवं जल जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित आरआईटी के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के प्रभागाध्यक्ष डॉ. अजय सिंह ने बच्चों को स्वच्छता संबंधित जानकारी दी। साथ ही स्मार्ट शहरों के बारे में अवगत कराया। संस्थान के निदेशक डॉ. शरद कुमार जैन ने बच्चों को स्वच्छता के

महत्व एवं जल संरक्षण के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी दी। डॉ. रमा मेहता ने पानी के संरक्षण एवं दिनचर्या में स्वच्छता के बारे में जागरूक किया। इसके अलावा नुक्कड़ नाटक के माध्यम से बच्चों को स्वच्छता एवं पानी का महत्व, पॉलीथिन का उपयोग न करने और खुले में शौच नहीं करने आदि की जानकारी दी। स्वच्छ भारत मिशन के नोडल अधिकारी वैज्ञानिक डॉ. एलएन ठकुराल ने स्वच्छता के प्रति सचेत रहने की अपील की। इस मौके पर वैज्ञानिक डॉ. सेंथिल कुमार, राजेश नेमा, चारू मिश्रा, किरण आहुजा, एसके सत्यार्थी, सुभाष किचलू, एनआर अल्लका, आकाश कुमार, उमेश कुमार, अंकुश कुमार के अलावा स्कूल की प्रधानाचार्य एवं शिक्षिकाएं उपस्थित रही।

कला में आद्रिका व यति ने मारी बाजी

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान में स्वच्छता पखवाड़े के तहत बच्चों के लिए स्वच्छता पर कला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

स्वच्छता पखवाड़े के दौरान स्कूली बच्चों के लिए आयोजित चित्र कला प्रतियोगिता में बेहतर प्रदर्शन करने वाली छात्रा को पुरस्कृत करते निदेशक राजसं।

संस्थान में आयोजित कार्यक्रम में स्कूली बच्चों को डाक्यूमेंट्री फिल्म दिखाई गई। इसके जरिये बच्चों को जल संरक्षण को लेकर जागरूक किया गया। इस अवसर पर आरआईटी के निदेशक डॉ. पराग जैन एवं सिविल इंजीनियरिंग विभाग के प्रभागाध्यक्ष डॉ. अजय सिंह और आईआईटी रूड़की के सहायक प्रोफेसर डॉ. अजंता गोस्वामी ने बच्चों को स्वच्छता के महत्व के बारे में जानकारी दी। साथ ही बच्चों के लिए आयोजित कला प्रतियोगिता का मूल्याकन किया। संस्थान के निदेशक डॉ. शरद कुमार जैन ने बच्चों को स्वच्छता एवं जल संरक्षण के महत्व के बारे में जानकारी दी। वहीं स्वच्छ भारत मिशन के नोडल अधिकारी वैज्ञानिक डॉ. एलएन ठकुराल ने बच्चों से स्वच्छता के प्रति सचेत रहने की अपील की। कला प्रतियोगिता में वर्ग एक में मोंटफोर्ट की कक्षा पांच की आद्रिका ने प्रथम, मोंटफोर्ट कक्षा पांच की इसिका त्यागी ने द्वितीय और कुनिस ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वर्ग दो में कक्षा आठ की यति संगवान ने प्रथम स्थान हासिल किया। जबकि मोंटफोर्ट स्कूल के जिनेश कुमार महापात्रा द्वितीय एवं सेंट जोसफ स्कूल के कक्षा आठ के छात्र जयप्रकाश साहू तृतीय रहे। इस मौके पर वैज्ञानिक डॉ. एके लोहनी, किरण आहुजा, ओमप्रकाश, एसके सत्यार्थी सुभाष किचलू, आशा रानी, नरेंद्र वार्ष्णेय, नीलम बोहरा, आकाश कुमार आदि उपस्थित रहे।

महिलाओं के लिए आयोजित की गई कार्यशाला

स्वच्छता पखवाड़े के तहत राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान की ओर से 28 मार्च 2019 को महिलाओं के लिए स्वच्छता एवं जल संरक्षण पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न विभागों एवं संस्थाओं की महिलाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

स्वच्छता पखवाड़ा-2019 के दौरान 28 मार्च, 2019 को "स्वच्छता एवं जल संरक्षण" विषय पर महिलाओं के लिए आयोजित "कार्यशाला"

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आर्मी वाइफ वेलफेयर एसोसिएशन बी.ई.जी. रुड़की की अध्यक्ष सुमिता रघु उपस्थित रही। उन्होंने कहा कि जल प्रकृति की धरोहर है, लेकिन हमारी लापरवाही के कारण जल संकट मंडरा रहा है। चारू चतुर्वेदी ने प्रदूषित पानी पीने से होने वाली बीमारियों से बचाव के उपायों की जानकारी दी। आईआईटी रूड़की की डीन प्रशासन डॉ. रमा भार्गव ने आधुनिक तकनीकों एवं उसके सामाजिक प्रभाव पर जानकारी दी। उन्होनें कहा कि पुरूष एवं महिला दोनों ही समाज के लिए महत्वपूर्ण हैं। डॉ. वारिजा सिंह ने नारी सशक्तीकरण, सामाजिक खुशहाली और स्वच्छता को अहम बताया। सिंचाई विभाग की अधिशासी अभियंता इंजीनियर मंजू ने रेन वॉटर हार्वेस्टिंग की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि सभी लोग इससे जल संरक्षण करने में भागीदारी निभा सकते हैं। इस मौके पर रमा मेहता, डॉ. संगीता अग्रवाल, डॉ. शिखा जैन आदि ने भी अपने विचार रखे।

स्वच्छ भारत मिशन के नोडल अधिकारी वैज्ञानिक डॉ. एलएन ठकुराल ने स्वच्छता की शपथ दिलाई। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती सुमन गुर्जर, सुश्री अंजलि ने किया। कार्यक्रम में किरण आहुजा, चारू पडिय, सीमा भाटिया, बबीता शर्मा, सुभाष किचलू, नीलम बोहरा, काजल पाल, प्रदीप कुमार, आशीष बनर्जी, जगदीश चौधरी आदि मौजूद रहे।

जल गुणवत्ता प्रबंधन विषय पर कार्यशाला

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान रूड़की में 17 जून 2019 से "जल गुणवत्ता मूल्यांकन एवं प्रबंधन" विषय पर पांच दिवसीय कार्यशाला की शुरूआत हुई। इस दौरान प्रतिभागियों को संस्थान की जल गुणवत्ता प्रयोगशाला का दौरा भी कराया गया और विभिन्न उपकरणों के विषय में जानकारी दी गई।

कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में संस्थान के कार्यकारी निदेशक डॉ. राकेश कुमार ने कहा कि हमारे देश में वर्षा के पैटर्न में काफी विषमता है। जहां जैसलमेर में औसत वार्षिक वर्षा लगभग 154 एमएम होती है, वहीं मौसिनराम में करीब 12000 एमएम औसत वार्षिक वर्षा होती है। इस वजह से कहीं पर बाढ़ और कहीं पर सूखे की

स्थिति पैदा हो जाती है। देश में पानी की पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता ही एक समस्या नहीं है, अपितु देश आज पीने योग्य पानी की उपलब्धता से भी जूझ रहा है। हमारे जल संसाधन, सतही एवं भूजल, दोनों की जल गुणवत्ता चिंता का विषय बनी हुई हैं, इसलिए इस तरह की कार्यशालाएं नितांत आवश्यक हैं। उन्होंने कहा कि मंत्रालय स्तर पर भी जल की महत्ता को ध्यान में रखते हुए नए मंत्रालय, "जल शक्ति" का गठन किया गया है। नेशनल हाइड्रोलॉजी प्रोजेक्ट के नोडल ऑफिसर डॉ. संजय जैन ने इस परियोजना के तहत किये जा रहे कार्यों की जानकरी दी। डॉ. सीपी कुमार ने शोध कार्यों को प्रतिभागियों के साथ साझा किया। डॉ. मुकेश शर्मा, डॉ. ब्रिजेश कुमार यादव आदि ने भी व्याख्यान दिए। संचालन डॉ. प्रदीप कुमार ने किया। कार्यशाला का आयोजन डॉ. जयवीर त्यागी के मार्गदर्शन में डॉ. राजेश सिंह के द्वारा किया गया।

राजसं रूड़की के पर्यावरणीय जलविज्ञान प्रभाग द्वारा नेशनल हाइड्रोलॉजी प्रोजेक्ट के तहत प्रायोजित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. राजेश सिंह ने बताया कि उक्त कार्यक्रम में सिंचाई अनुसंधान संस्थान रूड़की, केन्द्रीय जल आयोग, केन्द्रीय भूजल बोर्ड, सिंचाई एवं स्वास्थ्य विभाग हिमाचल प्रदेश, एन.एच.पी. महाराष्ट्र, डब्लू. आर.डी. राजस्थान, पी.डब्ल्यू.डी. तमिलनाडु एवं देश के विभिन्न हिस्सों हल्द्वानी, हैदराबाद, कोच्चि, नई दिल्ली, भोपाल, नासिक, अजमेर, कोटा, बिलासपुर इत्यादि के प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस कार्यक्रम में डॉ. राजेश सिंह, डॉ. मुकेश शर्मा, डॉ प्रदीप कुमार, डॉ. ओमकार सिंह, डॉ. सुमन्त कुमार एवं डॉ. अंजलि व भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रूड़की के रसायन विभाग के डॉ. एम.आर. मौर्य डॉ. नसीम अहमद, सिविल विभाग के डॉ. ए.के. काजमी तथा डॉ. ब्रिजेश कुमार ने विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार रखे। इस दिशा में वैज्ञानिकों एवं प्राध्यापकों ने अपने व्याख्यान में जल गुणवत्ता के आंकलन हेतु योजना, जल के नवीनीकरण एवं संरक्षण तथा प्राकृतिक तरीके से भूजल में उपस्थित प्रदूषकों के निदान, भूजल में आर्सेनिक व फ्लोराइड के निवारण, दूषित जल उपचार संयंत्र में मेम्ब्रेन की भूमिका आदि विषय पर विस्तृत जानकारी प्रदान की। प्रतिभागियों को जलगुणवत्ता प्रयोगशाला में विभिन्न उपकरणों की जानकारी के साथ-साथ रूड़की के एक्वाडक्ट तथा ग्राम इब्राहिमपुर के तालाब का दौरा करवाया गया, जहां प्रतिभागियों को यह अवगत कराया गया कि किस प्रकार कुछ विशेष प्रजाति के पौधों का प्रयोग कर जल प्रदूषण के स्तर को कम किया जा सकता है। इसके बाद प्रतिभागियों को जगजीतपुर स्थित एसटीपी (सीवेज ट्रीटमेंट प्लान्ट) का भी दौरा कराया गया तथा वहां के उपकरणों के बारे में जानकारी प्रदान की गई। संस्थान के कार्यकारी निदेशक ने अपने व्याख्यान में कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्देश्य प्रतिभागियों के बौद्धिक विकास के साथ-साथ उनके व्यावहारिक अनुभव का विकास किया जाना भी है। इस कार्यक्रम में संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिकों के साथ-साथ वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी वी.के. शर्मा, बबीता शर्मा, बीना प्रसाद, राकेश गोयल, पवन कुमार सहित अन्य प्रतिभागीगण मौजूद रहे।

नेशनल हाइड्रोलॉजी प्रोजेक्ट द्वारा "जल गुणवत्ता निर्धारण एवं प्रबंधन" विषय पर प्रायोजित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के प्रतिभागीयों का ग्रुप फोटोग्राफ।

संपर्क करें:
पवन कुमार
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान रूड़की